the pioneer
LUCKNOW I TUESDAY I JULY 16, 2013


# 16 cane officers visit farmer's field in Biswan to get practical training

PIONEER NEWS SERVICE ■
LUCKNOW

Sixteen cane officers of different sugar mills visited the field of Shailendra Verma in Tikra village (Biswan), who had obtained a lead in sugarcane production in UP by producing 2,519 quintals of sugarcane in one hectare area (2013). The visit of the cane officers was arranged under the 21-day-long National Training on Sugarcane Management and Development being organised at the IISR here.

The training coordinator and Senior Scientist at IISR, Dr A K Sah, said that the visit was organised to make real-life situations available to the cane officers for learning the techniques and methods of technology transfer so that after completion of training the empowered trainees may be able to implement successfully the example in their respective mill zone areas for sugarcane development and the prosperity of farmers. In this training 16 cane officers from West Champaran, Bihar, Kolhapur, Maharashtra, and Uttar Pradesh are participating.

The Indian Institute of Sugarcane Research and sugar mills from Biswan are jointly implementing the transfer of technology project under which sugarcane techniques i.e. high-yielding varieties, water-saving sugarcane techniques, intercropping with sugarcane, a ratoon management device, healthy seed cane production technique, trench-and-ring method of planting etc are demonstrated at farmers' fields in the mill zone areas. As a result a farmer like Shailendra Verma produced a record 2,519 quintals of cane in one hectare area, which was more than three times the state average and led in sugarcane production there in the year 2013.

Several other farmers of the area like Abdul Bari, Abdul Hadi, Aditya Nath and others are also engaged in healthy competition for a high cane yield with the help of techniques as demonstrated and explained by the IISR scientists and mill officials. The Sugarcane Manager, Dr Rambir Singh, said that the mill was planning to form a club of farmers producing 200 tonnes per hectare or more in the mill zone and efforts would be made to add as many farmers to this club as possible. The MD of the mill, Dr Anoop Kumar, explained the model of cane development and cane marketing to the visiting cane officers and discussed the issues related to uninterrupted supply of cane to the mills during the crushing season. He also appealed to the cane officers to work hard for the betterment of farmers and sugarcane cultivation in their respective mill zone areas.

It was a pleasant surprise for all the sugar mill officers to see sugarcane of 10-12 feet height and 1-2 kilogram in weight in the farmer's field just in the month of July when the grand growth period started shortly and will continue for the next two or three months.

जनसंदेश टाइम्स
लखनऊ, मंगलवार, 16 जुलाई, 2013

# रिकार्ड उपज वाले किसान का खेत देखा

आइआइएसआर की ओर से चल रहे गन्ना प्रशिक्षण कार्यक्रम के तहत गन्ना विकास अधिकारियों ने बिसवां के किसान शैलेन्द्र वर्मा के गन्ने के खेत का स्थलीय निरीक्षण किया।

**लखनऊ।** भारतीय गन्ना अनुसंधान संस्थान (आइआइएसआर) में गन्ना प्रबंधन एवं विकास विषय पर चल रहे राष्ट्रीय प्रशिक्षण कार्यक्रम में हिस्सा लेने वाले 16 जनपदों से आये प्रशिक्षणार्थियों ने सीतापुर स्थित बिसवां चीनी मिल बिसवां के सुरक्षित क्षेत्र में किसानों के खेतों का भ्रमण किया।

इस दौरान विभिन्न चीनी मिलों के 16 गन्ना विकास अधिकारियों को टिकरा ग्राम के किसान शैलेन्द्र वर्मा के खेतों में भारतीय गन्ना अनुसंधान संस्थान के तकनीकों के जरिए तैयार गन्ने के खेत को देखने का सुनहरा अवसर मिला। मालूम हो कि श्री वर्मा के नाम है प्रदेश में सर्वाधिक प्रति हेक्टेयर गन्ने की खेती करने का है।

प्रशिक्षण कार्यक्रम के समन्वयक और आइआइएसआर के वरिष्ठ वैज्ञानिक डा. एके साह ने बताया कि प्रशिक्षण का मूल उद्देश्य चीनी मिलों के अधिकारियों को किसानों के खेतों पर गन्ना विकास के लिए प्रसार-प्रचार की गतिविधियों को संचालित करने के तौर-तरीके के बारे में प्रायोगिक जानकारी प्रदान करना है।

**कार्यक्रम**

**शैलेन्द्र वर्मा के नाम है प्रति हेक्टेयर 2,519 कुन्तल गन्ने की खेती का रिकार्ड**

बिसवां चीनी मिल के गन्ना प्रबंधक डॉ. रामबीर सिंह का कहना है कि आने वाले समय में 200 टन प्रति हेक्टेयर या इससे अधिक उपज लेने वाले किसानों का क्लब बनाया जायेगा। इस क्लब में अधिक से अधिक किसानों को जोड़ा जायेगा। भ्रमण कार्यक्रम में बिसवाँ चीनी मिल के गन्ना महाप्रबंधक डा. अनूप कुमार ने प्रशिक्षणार्थियों को मिल सुरक्षित क्षेत्रफल में आदर्श गन्ना विकास तथा गन्ना विपणन व्यवस्था के लिए आवश्यक पहलुओं पर विस्तारपूर्वक जानकारी दी। बसं.

अमर उजाला लखनऊ । मंगलवार । 16 जुलाई 2013

# किसान तैयार कर रहे 20 फीट ऊंचा गन्ना

लखनऊ (ब्यूरो)। वैज्ञानिक तौर तरीकों से फसल उत्पादन को प्रदेश में लोकप्रियता मिलने लगी है, खासतौर पर गन्ने की खेती को। इंडियन इंस्टीट्यूट ऑफ शुगरकेन रिसर्च (आईआईएसआर) की तकनीकों को अपनाकर खेती कर रहे सीतापुर में बिसवां के टिकरा गांव निवासी किसान शैलेंद्र वर्मा के खेतों में इस वक्त गन्ने की फसल 10 से 12 फीट ऊंची हो चुकी है। शैलेंद्र के अनुसार अगले पांच महीने में कटाई तक गन्ने 20 फीट तक ऊंचे हो चुके होंगे। जिसमें एक का वजन 3 से 4 किलो होगा। उनका दावा देश भर की 16 चीनी मिलों से आए अफसरों को आश्चर्यचकित करने के लिए काफी था।

**आईआईएसआर का प्रशिक्षण व फील्ड विजिट कार्यक्रम**

तीन सप्ताह का यह प्रशिक्षण उत्तर प्रदेश, बिहार व महाराष्ट्र की मिलों के गन्ना विकास अधिकारियों के लिए आयोजित किया गया। कार्यक्रम के अंतिम दिन सोमवार को वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ. एके साह ने बताया कि उन्नत प्रजाति, सिंचाई तकनीक, पेड़ी प्रबंधन मशीन, नाली विधि से बुआई और सह फसली कार्यक्रम के चलते गन्ना किसानों को फायदा पहुंचाया जा रहा है। शैलेंद्र वर्मा ने बताया कि वे प्रति हेक्टेयर करीब 2,519 (ढाई टन से अधिक) क्विंटल गन्ने का उत्पादन कर चुके हैं। जल्द ही ऐसे किसानों का क्लब बनाया जाएगा जो एक हेक्टेयर भूमि में दो टन से अधिक गन्ने का उत्पादन कर रहे हैं। ताकि बाकी लोगों के लिए नजीर बन सके।

लखनऊ
डेली न्यूज एक्टिविस्ट
लखनऊ, मंगलवार, 16 जुलाई 2013

# 20 फीट का गन्ना वजन चार किलो!

**लखनऊ ( डीएनएन )।** टिकरा ग्राम बिसवां के एक खेत में गन्ना लगभग 10-12 फीट का और एक-दो किलो वजन का है, जो कटाई के समय दिसंबर से मार्च के बीच 16-20 फीट और तीन-चार किलो का होगा। यह अपने आप में अद्भुत है। दरअसल भारतीय गन्ना अनुसंधान संस्थान ने इस खेत में नई तकनीक से गन्ने की फसल लगाई है। तकनीक रंग ला रही है, जिसका नतीजा है कि पांच माह पहले ही गन्ने की मोटाई और चौड़ाई देखकर हर कोई विश्वास नहीं कर पा रहा है।

**• गन्ना अनुसंधान की नई तकनीक का कमाल प्रशिक्षार्थी हुए हैरान**

कार्यक्रम के समन्यवक और आईआईएसआर के वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ. एके साह ने बताया कि संस्था के तहत चलाए जा रहे कार्यक्रम 'गन्ना प्रबंधन एवं विकास' में कई मिलों से आए प्रशिक्षणार्थियों को प्रशिक्षण दिया जा रहा है। जिसके तहत सोमवार को उन्हें बिसवां चीनी मिल और बिसवां सीतापुर क्षेत्र में खेतों का भ्रमण कराया गया। इस मौके पर मौजूद प्रदेश में 2519 कुंतल प्रति हेक्टेयर गन्ने का रिकार्ड उत्पादन करने वाले शैलेन्द्र वर्मा को गन्ना फसल देखकर विश्वास ही नहीं हो रहा था, कि कटाई से लगभग पांच महीना पहले ही गन्ना की फसल इतनी अच्छी हो गई है। वहीं प्रशिक्षार्थी भी हैरान थे। कार्यक्रम में विभिन्न चीनी मिलों के 16 गन्ना विकास अधिकारी भाग ले रहे हैं। डॉ. साह ने बताया कि भ्रमण कार्यक्रम का मकसद चीनी मिलों के अधिकारियों को किसानों के खेतों पर गन्ना विकास के तौर-तरीके के बारे में जानकारी देना था। इस प्रशिक्षण में बिहार के हीरानगर के अलावा उत्तर प्रदेश के त्रिवेणी शुगर, डीएससीएल शुगर, मवाना शुगर, डालमिया, सेक्सरिया शुगर के अधिकारी शामिल हैं।

कैनविज टाइम्स
10 मंगलवार, 16 जुलाई, 2013

# गन्ना उपज को देखकर गदगद हुए चीनी मिल के अधिकारी

कैनविज टाइम्स ब्यूरो

लखनऊ। राजधानी स्थित भारतीय गन्ना अनुसंधान संस्थान में एक से 21 जुलाई तक 'गन्ना प्रबंधन एवं विकास ' विषय पर आयोजित राष्ट्रीय प्रशिक्षण कार्यक्रम में सभी प्रशिक्षणार्थीयों ने बिसवा चीनी मिल व सम्बन्धित किसानों के खेतों का भ्रमण किया। टिकरा ग्राम बिसवा के गन्ना किसान शैलेन्द्र वर्मा के खेतों में संस्थान के तकनीकों का प्रदर्शन प्लाट का वास्तविक अवलोकन इस प्रशिक्षण में भाग ले रहे विभिन्न चीनी मिलों के 16 गन्ना विकास अधिकारियों ने किया। इस समय खेत में गन्ना लगभग 10-12 फुट का तथा एक से दो किलो वजन का है। ऐसे में कटाई के समय दिसम्बर से मार्च के बीच 16-20 फीट तथा 3-4 किलो का गन्ना हो जाएगा जो कि अपने आप में अदभुत उपज है। कार्यक्रम के समन्वयक डॉ. एके साह, वरिष्ठ वैज्ञानिक भारतीय गन्ना अनुसंधान संस्थान के अनुसार इस भ्रमण कार्यक्रम का उद्देश्य चीनी मिलों के अधिकारियों को किसानों के खेतो पर गन्ना विकास के लिए प्रसार-प्रचार गतिविधियों को संचालन करने के तौर-तरीके के बारे में प्रायोगिक जानकारी देना था। इस प्रशिक्षण में हरीनगर, बिहार त्रिवेणी शुगर, डीएससीएल शुगर, मवाना शुगर, डालमिया, सेक्सरिया शुगर, जवाहर सहकारी चीनी मिल व कोल्हापुर महाराष्ट्र के गन्ना विकास अधिकारी प्रशिक्षण प्राप्त कर रहे हैं।

भ्रमण कार्यक्रम में बिसवा चीनी मिल के गन्ना महाप्रबंधक डॉ. अनूप कुमार ने प्रशिक्षणार्थीयों को मिल सुरक्षित क्षेत्रफल में आदर्श गन्ना विकास तथा विपणन व्यवस्था के लिए आवश्यक पहलूओं पर विस्तारपूर्वक जानकारी दी। प्रशिक्षण में भाग ले रहे गन्ना अधिकारियों को पूरे लगन तथा क्षमता के साथ कार्य करने का संदेश भी दिया जिससे चीनी उद्योग की समृद्धि में उनका योगदान अपेक्षाकृत पहले से ज्यादा बेहतर हो।

कल्पतरु एक्सप्रेस
www.kalptaruexpress.com



# शैलेन्द्र का खेत देखते रहे चीनी मिल के अधिकारी

कल्पतरु समाचार सेवा

सीतापुर जिले के टिकरा गांव के किसान शैलेन्द्र वर्मा ने गन्ना उत्पादन मे किया यूपी टॉप

लखनऊ। उत्तर प्रदेश में 2519 कुन्तल प्रति हेक्टेयर गन्ने का रिकार्ड उत्पादन करने वाले शैलेन्द्र वर्मा का गन्ना फसल देखकर विश्वास ही नहीं हो रहा था कि कटाई से लगभग पांच महीना पहले ही गन्ना इतना लंबा तथा मोटा हो सकता है।

भारतीय गन्ना अनुसंधान संस्थान, लखनऊ में 'गन्ना प्रबंधन एवं विकास' विषय पर आयोजित राष्ट्रीय प्रशिक्षण कार्यक्रम के अन्तर्गत सभी प्रशिक्षु अधिकारियों को बिसवां चीनी मिल, सीतापुर के सुरक्षित क्षेत्र में किसानों के खेतों का भ्रमण किया। ग्राम टिकरा, बिसवां के गन्ना किसान शैलेन्द्र के खेतों में भारतीय गन्ना अनुसंधान संस्थान के तकनीकों का प्रदर्शन करवा रखा है। प्रशिक्षण में भाग ले रहे विभिन्न चीनी मिलों के गन्ना विकास अधिकारियों ने प्रगतिशील किसान शैलेन्द्र का खेत देखते ही रह गए। इस समय उनके खेत में गन्ना लगभग 10-12 फुट एवं 1-2 किग्रा वजन का है। यह गन्ना कटाई के समय दिसम्बर से मार्च के बीच 16-20 फीट एवं 3-4 किग्रा का होगा। चीनी मिलों के अधिकारियों ने किसान से कहा- यह अपने आप में अदभुत एवं अविस्मरणीय है। इस प्रशिक्षण कार्यक्रम के समन्वयक डॉ. एके साह ने बताया कि इस भ्रमण कार्यक्रम का उद्देश्य चीनी मिलों के अधिकारियों को किसानों के खेतों पर गन्ना विकास के लिए प्रसार-प्रचार गतिविधियों को संचालन करने के तौर-तरीके के बारे में प्रायोगिक जानकारी देना था। इस प्रशिक्षण में प्रदेश के चीनी मिलों के अलावा बिहार व महाराष्ट्र के गन्ना विकास अधिकारी प्रशिक्षण प्राप्त कर रहे हैं।

संस्थान एवं बिसवां चीनी मिल के संयुक्त प्रयास से चीनी मिल क्षेत्र में गन्ना तकनीकों जैसे उन्नत गन्ना प्रजाति, सिंचाई जल बचत तकनीक, पेड़ी प्रबंधन मशीन, स्वस्थ गन्ना बीज उत्पादन तकनीक, नाली विधि से गन्ना बुआई, गन्ना के साथ सहफसली खेती इत्यादि पर तकनीकी हस्तांतरण कार्यक्रम चलाया जा रहा है। परिणामस्वरुप, जो किसान तीन-चार वर्ष पहले सिर्फ सब्जी की खेती कर रहा था। वह आज गन्ना खेती करके 2519 कुन्तल प्रति हेक्टेयर गन्ना उपज प्राप्त कर पूरे प्रदेश में प्रथम स्थान पर है। चीनी मिल क्षेत्रों के अन्य किसान जैसे अब्दुल बारी, अब्दुल हदी व आदित्य नाथ इत्यादि भी वैज्ञानिकों एवं चीनी मिलों द्वारा बताये तकनीकों को अपनाकर श्रेष्ठ बनने की प्रतिस्पर्धा में शामिल हैं। भ्रमण के दौरान बिसवां चीनी मिल के गन्ना प्रबंधक डॉ. रामबीर सिंह ने बताया कि आने वाले समय में 200 टन प्रति हे. या इससे अधिक उपज लेने वाले किसानों का क्लब बनाया जायेगा।